Scanned by CamScanner

श्री लक्ष्मी चालीसा

दोहा

अष्टभुजी माँ - सृष्टी पालनी। देवअमूर मनुज दुलारनी।
दायें नाक नथिया, काने कनफूल
पूजा अर्चना हावे, ले पान अक्षत फूल मेवा गुगुल।।

चौपाई

चार भूजा वाली, जगतकि पालिका।
देव कुल रक्षक, असुरकूल धालिका।।
शुभद्रा आपके नाम, क्षीर सागर है धाम।
ध्यावत नर नारी, बनत सबके काम।।
समय समय पर लेती है अवतार।
सीता, रूकमणी, काली, दूर्गा कि जय जयकार।।

Scanned by CamScanner

सोम शुक्रवार पूजे चरण संसार।
मूरख कामेश्वर कैसे करे उद्गार।।
कलि सतावै भारी, रोग न नशायै हमारी।
अम्बे कि पावं तले, अर्जी है अपनी डारी।।
जीव के हो अन्न दात्री। सबके हो भाग्य विद्यात्री।
तुही तो महा लक्ष्मी, आपही हो गायत्री।।
एक मुख अष्ट भूजी, अनेक मुख, अनेक रूप धारी।
आप ही राधा, जांम्वती जोड़ी कृष्ण बनवारी।।
महीमा सुन, ढ़ेर तेरो गुहार लगाई।
तेरो चौखट पर धूनी रमाई।।
करो न देर, हटाओ अपनी टेर
भक्तों को सतावे, दुख, भाग्य का फेर।।
मांगते मांगते चौथापन आता।
कष्ट में भींग, गाता जगराता।।

Scanned by CamScanner

स्वर्ण कि सूरत लिए मेरी लक्ष्मी मइया।
नारायण कि धर्मपत्नि है यें मेरे भइया।।
धन कि है देवी, आर्शिवाद कि है माता।
जिनके आगे नतमस्तक, जीव शिव विद्याता।।
लाल रंग केशरीया पै, शोभे गोट सारी।
जग जननी कि है उलूक गरूड़ संवारी।।
नारी अंश आपकि, रूप-कुंआरी पूजे धापकि।
निर्धनता हटावे भारी, कहत कामेश्वर तिवारी।
सुनो मेरी लक्ष्मी माता। मानलो कोई एकनाता।।
पुत्र तू बनाले मुझे। पाप काल में ना सुझे।
रिद्धि सिद्धि साधिका। कृष्ण की हो राधिका।
जय जयंती, जय कमला विभला जय महरानी।
माया रूपधारणी, संसार संचालनी, पतिव्रतों बालाजी कि रानी।।

Scanned by CamScanner

करत उपवास, कष्ट होत नाश।
शुक्रवार खाश तेरो, मेरो होत अभास।।
कमल पुष्प से पूजे पांव, जो देवी कमला कि।
ताको कष्ट हरे पल, आशिष बिमला कि
सरल दया चित्त मृदुल हो विचार।
नीज भक्तों कि करती हो उद्धार।।
बिन तेरो कृपा अमीर ना होवे।
भजन हीन गरीब बन रोवे।।
सुन मेरी अम्बें कर दे दाया।
'योगी' कामेश्वर कि काटो माया।
जगबीच देखूं तूझे हे जगदंवे।
तेरो हाथ है सबसे लम्बे।।
रिद्धि सिद्धि को देने वाली।
जो गावे बजाके ताली।।

Scanned by CamScanner

छपन भोग हो उसके थाली।
भले हो पहले वो गवाली।।
चौथ नवमी दशमी चतुर्दशी।
भौम लखबीवार (शुक्रवार) और शनिवारवसी।।
पूर्णिमा, कूहू (अमास्या) रात्रि करे पाठ।
उसके पूरन होय आशा आठ।।
निर्धन धनी, अबूध विद्वान।
अजसी बूढ़ा हो जाये महान्।।
रोगी निरोगी, गूगाव़म्ता।
कंलही शांत, नास्तिक भक्ता।।
लिखे कामेश्वर गुरू कि कृपा से।
आरती करै जो स्वर्ण रजत छीपा से।।
(ताकेघर) श्री हरिप्रिया रहसी।
स्वपन में वोसब कुछ कहसी।।

Scanned by CamScanner

श्रद्धा भाव से ये रीझ जाती।
द्वेष ईर्ष्या से खीज जाती।।
शुम्भ निशुम्भ मारी, रावण बध कराई।
अपने जन को अभय करी, ताको दुहाई दुहाई।।
ॐ लक्ष्मी नमः जो करे जाप।
सवा मास में कटे सब पापा।।
अन्नपूर्णा भी आप ही माता।
जो करते आप का जगराता।।
शंखध्वनी बीच मंगल गीत।
भागे शोक भूत, होय हृदय प्रीत।।
पार्वती सरस्वती भी है आपके रूप।
जो माने अन्तर गिरे भवकूप।।
गंगा जमुना सरस्वती भी आप।
कुंडलनी शक्ति भी तेरोछाप।।

Scanned by CamScanner

दोहा

चैत्र श्रवण, शरद मासा।
स्वर्ण के झूला झूले खासा।।
बावरा कामेश्वर नाथ अनाथ।
थामले आकर पुत्र का हाथ।।
या देवी विष्णु अर्धांगिनी।
सत-सत नमन करूँ जगतारणी।।
उड़उल पुष्प मइया, नीमके डाल।
रहती माता, भाखें कामेश्वर हाल।।
सर्वत्र तेरोवास, चेतन जड़ बीच।
वख्यानों का कामेश्वर हौ अति नीच।।
करो निरोग देह। सीद्धि संपत देही।
वंश वृद्धि करं भक्त बनाओ वासुदेव स्नेही।।

Scanned by CamScanner

जय जय जय लक्ष्मी मइया
सागर पुत्री होहूँ सहइया।।
कनक सिंहासन विराजे मेरो माता।
चार भुजी कमला केशरी रंग भाता।।
चरण पखारूं, लेलू बलइया जय जय।।
जय हरि पत्नी, जगत जग-माया।
आप कृपा से होवे निर्मल काया।
माथा टेकू हो जा सहइया।।
जय पालन हारनी, देवी दूर्गा अनपूर्णा।
लाल पुष्प और चढ़ावे मधुरचूर्णा।
कामेश्वर निहाल होय, नाचे तातथइया जय जय।।

Scanned by CamScanner